बिच्छू और मगरमच्छ

बिच्छू और मगरमच्छ

अगर कोई सदा दूसरों को डंक मारे या काट खाये तो उस जीव की किसी के साथ मित्रता नहीं हो सकती.....

एक विशाल चमकीली नीली नदी में एक मगरमच्छ रहता था जो अधिक बुद्धिमान न था. उतना ही मंदबुद्धि बिच्छू भी निकट ही रहता था. एक दिन बिच्छू को नदी पार करने के लिए किसी की सहायता चाहिए थी. क्या नदी पार करने तक मगरमच्छ और बिच्छू अपनी-अपनी सहज प्रवृत्ति को दबा पायेंगे?

इस उत्कृष्ट कहानी को लेखकों ने एक अनोखे रूप में प्रस्तुत किया है.

एक विशाल चमकीली नीली नदी के किनारे एक मगरमच्छ रहता था. जितनी अधिक उसे भूख लगती थी, उतनी ही उसकी बुद्धि कम थी.

निकट ही चट्टानों पर एक बिच्छू भी रहता था. उसका डंक तो बहुत तेज़ था, लेकिन उसकी बुद्धि मंद थी.

दोनों का दिमाग एक कंकड़ से बड़ा न था और, जैसा कि तुम इस कथा में पढ़ोगे, जो उनके लिए हितकारी न था.

एक सुबह चट्टानों से नीचे आकर बिच्छू विशाल चमकीली नीली नदी की ओर चल दिया. सिर्फ उसे ही पता था कि वह नदी के पास क्यों आया था.

वह अधिक तो न जानता था, पर इतना अवश्य समझता था कि अपने आप वह नदी पार न कर सकता था.

मगरमच्छ धूप में लेटा हुआ था और इस सोच में खोया हुआ था कि खाने के लिए अगली मछली उसे कब मिलेगी.

बिच्छू दौड़ते हुए मगरमच्छ के पास आया.

“क्षमा करें,” उसने कहा. “मैं नदी के पार जाना चाहता हूँ और मुझे लगता है कि मुझे किसी की सहायता लेनी पड़ेगी. क्या आप मेरी सहायता करेंगे?”

मगरमच्छ मछलियों के सपने देख रहा था. अपने ख्यालों में विघ्न पाकर वह थोड़ा नाराज़ हुआ. उसने उनींदे ढंग से गरगराते हुए कहा, “क्या तुम्हारा कोई मित्र नहीं है जो तुम्हारी सहायता कर सके?”

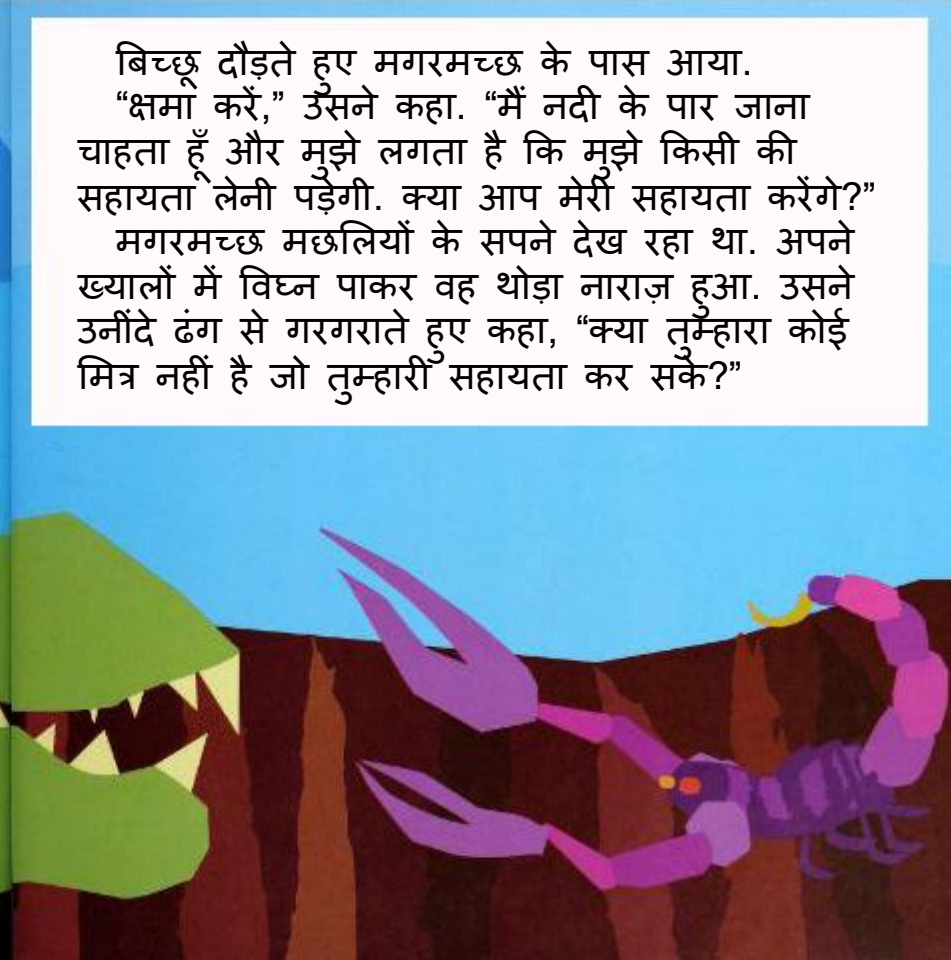

"नहीं, कोई मित्र नहीं है. मेरा कोई मित्र नहीं है क्योंकि मैं सदा दूसरों को डंक मारता रहता हूँ और यह उन्हें अच्छा नहीं लगता," बिच्छू ने कहा.

मगरमच्छ अपने छोटे से दिमाग में इस बात पर विचार करने लगा. "मेरा भी कोई मित्र नहीं है. मैं हर किसी को काटता रहता हूँ और यह उन्हें अच्छा नहीं लगता."

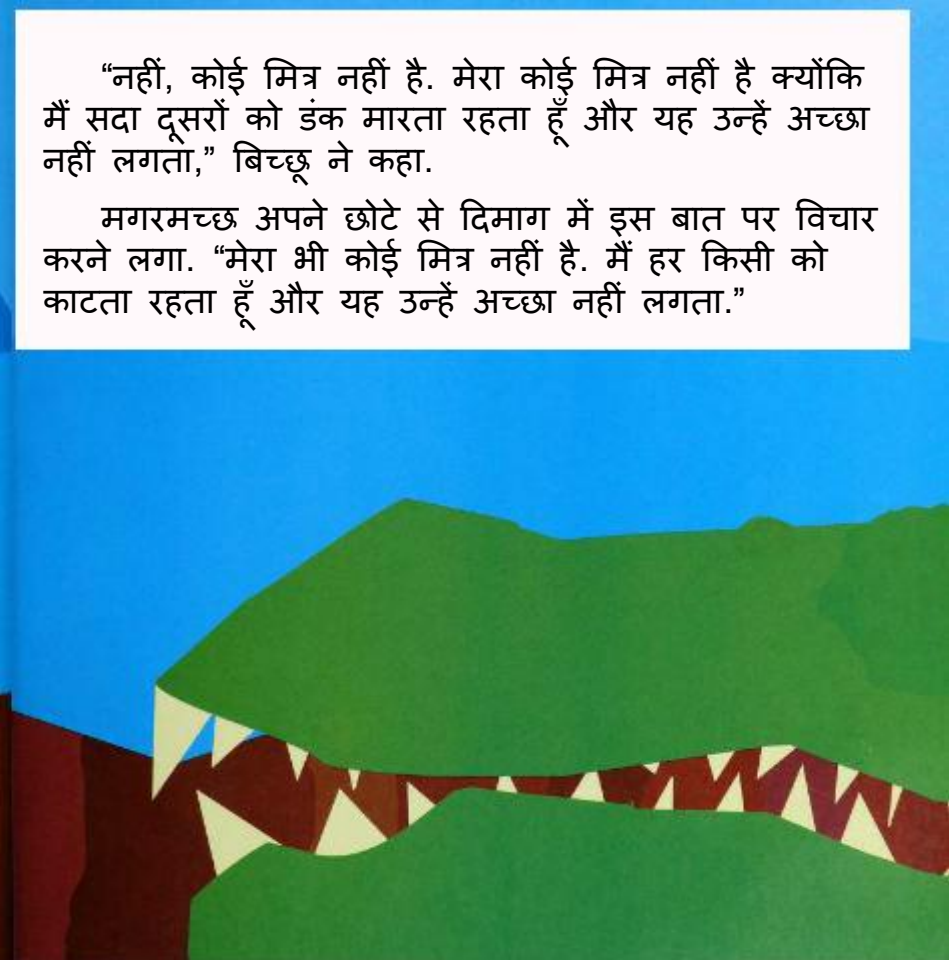

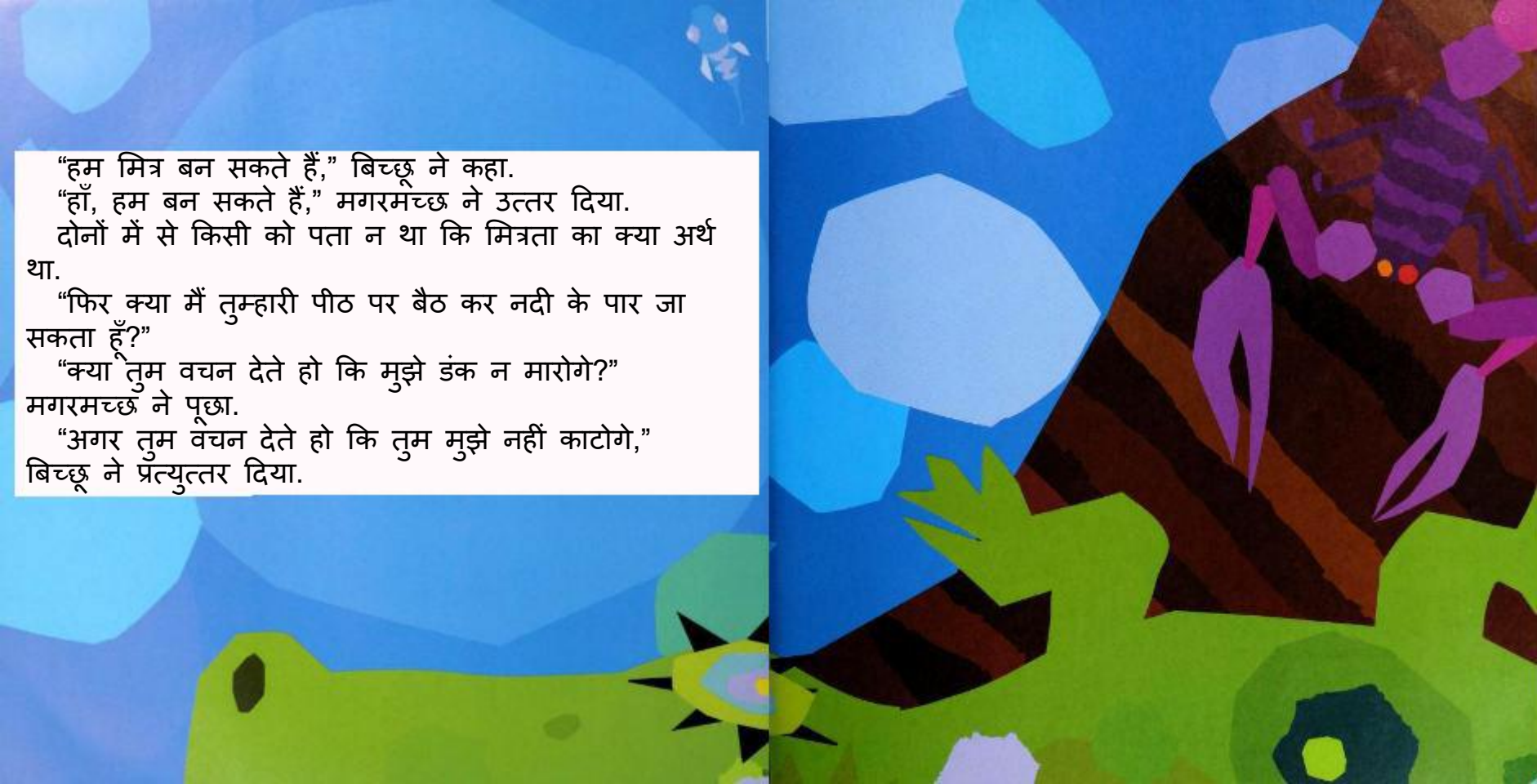

“हम मित्र बन सकते हैं,” बिच्छू ने कहा.

“हाँ, हम बन सकते हैं,” मगरमच्छ ने उत्तर दिया.

दोनों में से किसी को पता न था कि मित्रता का क्या अर्थ था.

“फिर क्या मैं तुम्हारी पीठ पर बैठ कर नदी के पार जा सकता हूँ?”

“क्या तुम वचन देते हो कि मुझे डंक न मारोगे?” मगरमच्छ ने पूछा.

“अगर तुम वचन देते हो कि तुम मुझे नहीं काटोगे,” बिच्छू ने प्रत्युत्तर दिया.

तो बिच्छू टेढ़ा-मेढ़ा चलता हुआ मगरमच्छ की पीठ पर बैठ गया और दोनों नदी पार करने लगे.

बिच्छू अपने को रोक न पाया. तुरंत ही वह मगरमच्छ की पीठ पर फुदकने लगा और फिर उसने उसे डंक मार दिया!
ZZZT!
ZZZT!
ZZZT!

मगरमच्छ ने
अपने विशाल
जबड़े खोले और
कड़ाक!
बिच्छू को काटने
के लिए झपटा.

“तुम ने वचन दिया था
कि तुम नहीं काटोगे!”
“तुम ने वचन दिया था
कि तुम डंक नहीं मारोगे!”

“यह सब

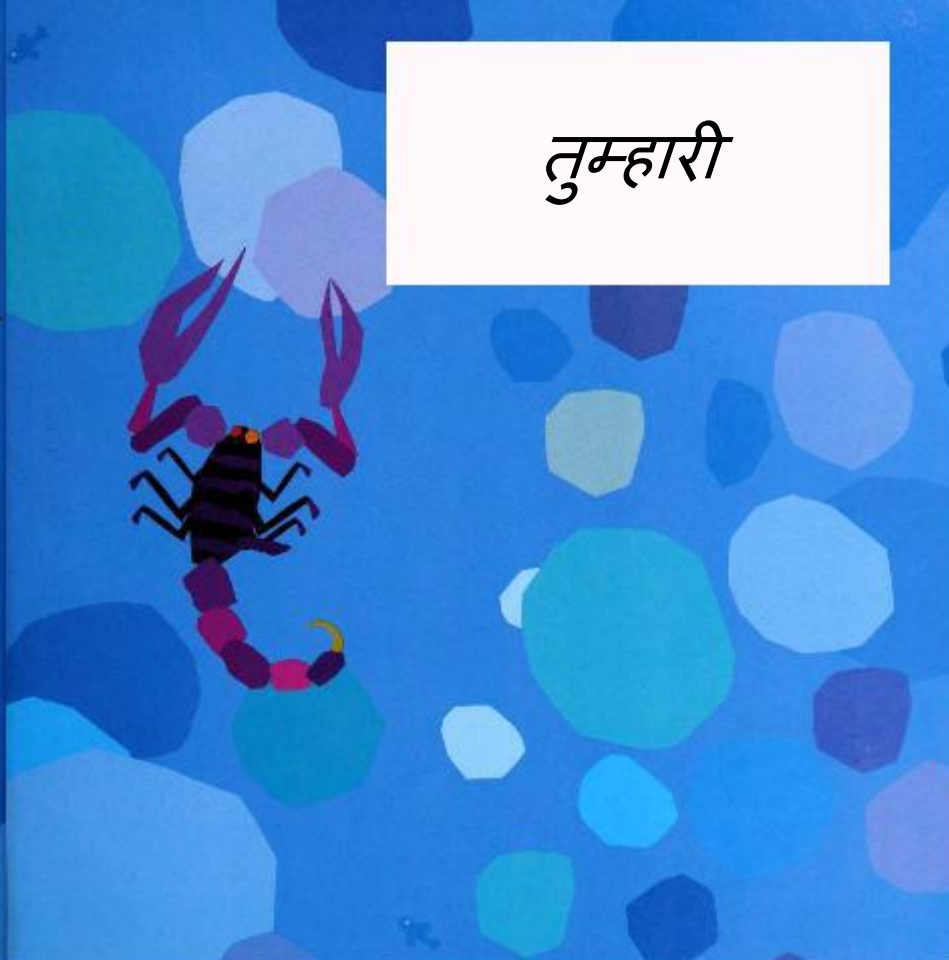

तुम्हारी

गलती है!’

विशाल चमकीली नीली नदी में डूबते हुए दोनों ने एक साथ चिल्ला कर कहा.

अगर कभी उस विशाल नीली नदी के किनारे तुम्हें आना पड़े तो नदी के पानी के निकट अपना कान ले जाना, दोनों को बहस करते हुए तब भी तुम सुन पाओगे...बशर्ते कि इस बीच किसी ने उनके झगड़े को सुलझा न दिया हो.

समाप्त